वर्तमान भरतनाट्यम नृत्य शैली में नाट्यशास्त्र के करण : विश्लेषणात्मक अध्ययन

शोध सार :–

''हस्तपादसमायोगो नृत्यस्य करणं भवेत्।''

करण नृत्य का एक अंग संचालन है, जिसमें शरीर के हाथ–पैर को मिलाकर जो हलन–चलन क्रिया की जाती है, उसे ही करण कहते हैं। लोगों एक समान समझ रखते हैं कि करण एक नृत्य स्थिति है, परन्तु यह स्थिति न होकर पहले स्थिति से दूसरी स्थिति तक जाने का अंग संचालन है, जिसमें हस्त एवं पाद तथा पूरे शरीर का समावेश होता है, जिसमें मण्डलक, स्थानक, चारी, संयुक्त, असंयुक्त हस्त आदि एक आपस में समन्वय होकर करणों का स्वरूप बनता है। नाट्यशास्त्र में 108 नृत्त करण के बारे में भरत मुनि जी ने चौथे अध्याय में विस्तारपूर्वक बताया है।

प्राचीन काल में करण का प्रयोग नाट्य में महत्वपूर्ण माना जाता था, क्योंकि यह नाट्य का भी एक भाग था, नाट्य में जितने भी नट्ट, अभिनेता होते थे वह अपने–अपने पात्रों के अनुसार करणों का प्रयोग करते थे। इसलिए उनके लिए करणों की शिक्षा अनिवार्य मानी जाती थी। मुख्यतः करण पशु–पक्षियों पर आधारित है, रस प्रधान है, लास्य एवं ताण्डव दो प्रकारों के लिए प्रयुक्त है, कुछ नायक/पुरुष उचित, स्त्री/नायिका उचित इस कारण नाट्य में इसका प्रयोग ज्यादा होता था।

कालान्तर में नाट्यशास्त्र का चलन एवं उसका अध्ययन धीरे–धीरे कम हो गया क्योंकि परावर्ती लेखकों द्वारा अन्य शास्त्रों लिखे जैसे–अभिनय दर्पण, संगीत रत्नाकर, भरतारण, भरतभाष्य इत्यादि और इनके अलावा विद्वानों ने प्रादेशिक भाषा में भी कई शास्त्र लिखे जो कि उस प्रदेश की नृत्य शैली में स्वीकृत हो गए, इन्हीं कारणों से नाट्यशास्त्र का प्रचलन कम हो गया। किन्तु पिछले कुछ वर्षों से नाट्यशास्त्र के अध्ययन को फिर से एक वेग मिला और करण विषय का अध्ययन अलग–अलग विद्वानों द्वारा शुरू किया गया। जिसमें भरतनाट्यम् की विदुषी पद्मविभूषण डॉ0 पद्मा सुब्रह्मण्यम ने विगत 40 वर्षों से भी अधिक इस विषय पर प्रायोगिक पक्ष तथा सैद्धान्तिक पक्ष पर शोध कार्य किया तथा करण को पुनर्जीवित किया। नाट्यशास्त्र में जिस प्रकार उसके अंग संचालन का वर्णन मिलता है तथा मन्दिर में प्राप्त नृत्य मूर्तियों का अध्ययन करके अपने विवेक बुद्धि से उन्होंने इस नृत्य शैली को पुनर्जीवित किया। उनके बाद अनेक विद्वान् गुरुओं ने भी अपने समझ से करण का अध्ययन कर विश्लेषण किया और अपने अनुसार करणों का प्रयोग अपने नृत्य शैलियों में सम्मिलित किया। इतने वर्षों से करण को अनेक नृत्यकारों ने सीखा और अपने नृत्य प्रस्तुतियों में उसका प्रयोग करते रहे, धीरे–धीरे युवा वर्ग में करण का अध्ययन करने के प्रति रस बढ़ रहा है। अनेक नृत्यकार जो करण सीखे हैं, उन्होंने अपनी प्रस्तुतियों में विविधतापूर्वक प्रयोग करना शुरू किया है।

हर वस्तु के दो पहलू होते हैं, वैसे ही कुछ विद्वानों के अनुसार करणों का प्रयोग भरतनाट्यम् में किया जाए तो वह अपना मूल स्वरूप खो देगा, ऐसी चिन्ता भी व्यक्त की गई है। प्रस्तुत शोध कार्य में ऐसे कई

नामांकित कलाकार जो करणों का प्रयोग अपने प्रस्तुति में कर रहे हैं तथा शास्त्रकार, गुरुजन और विद्वानों का साक्षात्कार करते हुए उनके मतों को जानकर यह सम्भावनाएँ बताई गई हैं कि यदि करणों का प्रयोग वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली में किया जाए तो उसके स्वरूप में कितना परिवर्तन हो सकता है। साथ ही साथ नृत्य की सौन्दर्यता में वृद्धि आ सकती है। इस शोध कार्य के तथा कथित अंतिम चरण में यह बात प्रकाश में आती है कि वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली भी कई वर्षों से अनेक बदलावों के साथ तथा अन्य विधा, अन्य नृत्य प्रकार तथा अन्य शैलियों के प्रकार से विमुक्त नहीं रह पाई है, इसका यह अर्थ होता है कि वर्तमान भरतनाट्यम् नृत्य शैली भी अनेक तत्वों से प्रभावित होते हुए अपना स्वरूप धीरे–धीरे बदलती रही है। यदि इसमें नाट्यशास्त्र के करणों का प्रयोग किया जाता है तो उसके स्वरूप में जो बदलाव आ सकते हैं, वह निश्चित ही नई सम्भवनाओं से फैलेंगी तथा उस स्वरूप में सौन्दर्यबोध की वृद्धि हो सकती है।

वर्तमान समय में भरतनाट्यम् के एकल नृत्य स्वरूप से लेकर नृत्य नाटिका स्वरूप तक जो यात्रा देखी जा रही है उसमें (नृत्य नाटिका) में करणों का प्रयोग लाभदायी हो सकता है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। शोधार्थी का यह भी विश्वास है कि यह शोध कार्य अनेक युवा छात्रों तथा नर्तकों के लिए भी लाभकारी हो सकता है।

शोधार्थी

प्रियम्बदा तिवारी